JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# भागलपुर जिला (बिहार) में जनसंख्या के व्यवसायिक संरचना में परिवर्तन: एक भौगोलिक दृष्टिकोण

***मनमोहन कुमार[1], डॉ. अनिरुद्ध कुमार[2]***

[1] *शोध छात्र, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत।*

[2] *एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रधानाचार्य, बी.एन. कॉलेज, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत।*

**सारांश**

व्यवसाय वह आर्थिक गतिविधियाँ हैं जिनके माध्यम से लोग अपनी आजीविका चलाते हैं, और इन गतिविधियों में संलग्न लोग किसी क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना का निर्माण करते हैं। यह संरचना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं को प्रभावित करती है तथा विभिन्न सामाजिक समूहों की आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। समय और स्थान के अनुसार यह पेशेवर संरचना बदलती रहती है, जो समाज के विकास स्तर और जीवन की गुणवत्ता को संकेत करती है। यह अध्ययन भागलपुर जिले की जनसंख्या में रोजगार और व्यवसायिक संरचना में हुए परिवर्तनों का भौगोलिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य दो दशकों (2001 और 2011) में कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र में श्रमिक वर्ग के वितरण में हुए बदलाव का तुलनात्मक मूल्यांकन करना है। अध्ययन से पता चलता है कि कृषि क्षेत्र में रोजगार घटा है, जबकि सेवा और उद्योग क्षेत्र में बढ़ोतरी हुई है। शहरीकरण के कारण रोजगार संरचना में भौगोलिक भिन्नताएँ स्पष्ट हैं। यह शोध नीति-निर्माण और ग्रामीण एवं शहरी विकास योजना में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

***शब्द कुंजी:*** रोजगार परिवर्तन, श्रमिक वर्ग, सामाजिक-आर्थिक विकास, नीति निर्माण, क्षेत्रीय विकास

## 1. परिचय

व्यवसाय किसी भी समाज का मूलभूत घटक है और यह लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है। किसी क्षेत्र में लोग किन-किन आर्थिक गतिविधियों में लगे हैं, इसे उस क्षेत्र की व्यवसायिक संरचना **(Occupational Structure)** कहा जाता है। व्यवसायिक संरचना न केवल आर्थिक गतिविधियों को दर्शाती है, बल्कि यह समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय विशेषताओं को भी प्रभावित करती है। किसी क्षेत्र में विभिन्न पेशेवर वर्गों का वितरण उस क्षेत्र की आर्थिक स्थिति, विकास स्तर और जीवन की गुणवत्ता का संकेत देता है। भारत में रोजगार और व्यवसायिक संरचना समय के साथ बदलती रही है। कृषि पर आधारित समाज धीरे-धीरे उद्योग और सेवा क्षेत्र की ओर बढ़ रहा है। शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, शिक्षा, सरकार की नीतियाँ और तकनीकी विकास इन बदलावों को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं। भागलपुर जिला, बिहार का एक

महत्वपूर्ण जिला है, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से समृद्ध है। जिले की जनसंख्या में रोजगार और व्यवसायिक संरचना में पिछले दो दशकों में कई बदलाव देखने को मिले हैं। कृषि क्षेत्र में श्रमिकों की संख्या में कमी आई है, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। इसके साथ ही शहरीकरण के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पेशेवर संरचना में भौगोलिक अंतर स्पष्ट हो गया है।

## 2. साहित्यावलोकन

जनसंख्या और उसकी व्यवसायिक संरचना सामाजिक-आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। व्यवसायिक संरचना में बदलाव आमतौर पर आर्थिक विकास, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और शिक्षा के स्तर से प्रभावित होता है। कई शोधकर्ताओं ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रोजगार और कार्यबल के वितरण में समय के साथ हुए परिवर्तनों का अध्ययन किया है।

**टोपडे (2012)** ने स्पष्ट किया कि किसी क्षेत्र का विकास वहाँ की आर्थिक और व्यावसायिक दशा पर निर्भर करता है। उनके अनुसार, जहाँ आर्थिक साधन और व्यापार के अवसर अधिक हों, वहाँ शहरीकरण और ग्रामीण विकास की संभावना बढ़ती है। उन्होंने यह भी बताया कि विकसित गाँव वे हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी आजीविका स्वयं सुनिश्चित कर सके और समाज की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो। **राठौर (2014)** ने ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक और सामाजिक स्थिति तथा व्यवसाय के बीच प्रत्यक्ष संबंध पर अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण विकास के लिए निवासियों को नए व्यवसायों से जोड़ा जाना आवश्यक है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हो और समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके। **शर्मा एवं एन. एन. (2017)** ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवसायिक विविधीकरण की कमी और उसके प्रभाव पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार, अधिकांश गाँवों की जनसंख्या (87.7%) कृषि पर निर्भर है, और व्यवसायिक विविधीकरण न होने के कारण आर्थिक स्थिति कमजोर बनी रहती है। उन्होंने सुझाव दिया कि कृषि के अतिरिक्त अन्य आय स्रोतों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। **सरवाले एवं प्रसाद (2017)** ने जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं और व्यावसायिक संरचना के मध्य सहयोगात्मक संबंधों का अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि शिक्षा स्तर, आयु वर्ग और लिंगानुपात जैसे कारक क्षेत्रीय रोजगार संरचना और विकास को प्रभावित करते हैं। **कुमार (2018)** ने भारतीय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन और उसके जनसंख्या प्रतिरूप पर प्रभाव का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि रोजगार संरचना समाज के समग्र विकास में निर्णायक भूमिका निभाती है। **चौधरी (2018)** के अध्ययन अनुसार उत्तर प्रदेश में 1951-1981 तक जनसंख्या वृद्धि दर तेज रही, जबकि 1981-2011 तक धीमी पाई गई। इससे व्यावसायिक संरचना में भी परिवर्तन हुआ, जो भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों पर निर्भर था। दूसरी तरफ **पाण्डेय (2018)** ने इलाहाबाद के बारा तहसील में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना के अध्ययन से यह संकेत मिला कि व्यावसायिक संरचना क्षेत्र के आर्थिक विकास की सीमा निर्धारक तत्व है। **मालाकार (2019)** के अनुसार रायगढ़ के बरमकेला ब्लाक में व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन से क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई। यह परिवर्तन भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक संसाधनों और सामाजिक संरचना पर निर्भर करता है।

**3. अध्ययन क्षेत्र**

भागलपुर जिला बिहार के पूर्वी भाग में स्थित है, जिसकी भौगोलिक स्थिति 25°07′–25°30′ उत्तर अक्षांश और 86°37′–87°30′ पूर्व देशांतर के बीच तथा कुल क्षेत्रफल लगभग 2,569 वर्ग किमी है। यह पश्चिम में मुंगेर, दक्षिण में झारखंड के गोड्डा तथा पूर्व में कटिहार और पूर्णिया से घिरा है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण यह जिला ग्रामीण और शहरी—दोनों प्रकार की आबादी वाला है। यहाँ कृषि (धान, गेहूँ, मक्का, दलहन), उद्योग (सूती एवं सिल्क वस्त्र, फर्नीचर, खाद्य प्रसंस्करण) तथा सेवा क्षेत्र (शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, प्रशासन) प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ हैं। समय के साथ व्यवसायिक संरचना में बदलाव आया है, ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर निर्भरता कम हुई है, जबकि शहरी क्षेत्रों में उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार बढ़ा है, जिससे पेशेवर संरचना में क्षेत्रीय और समयगत अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

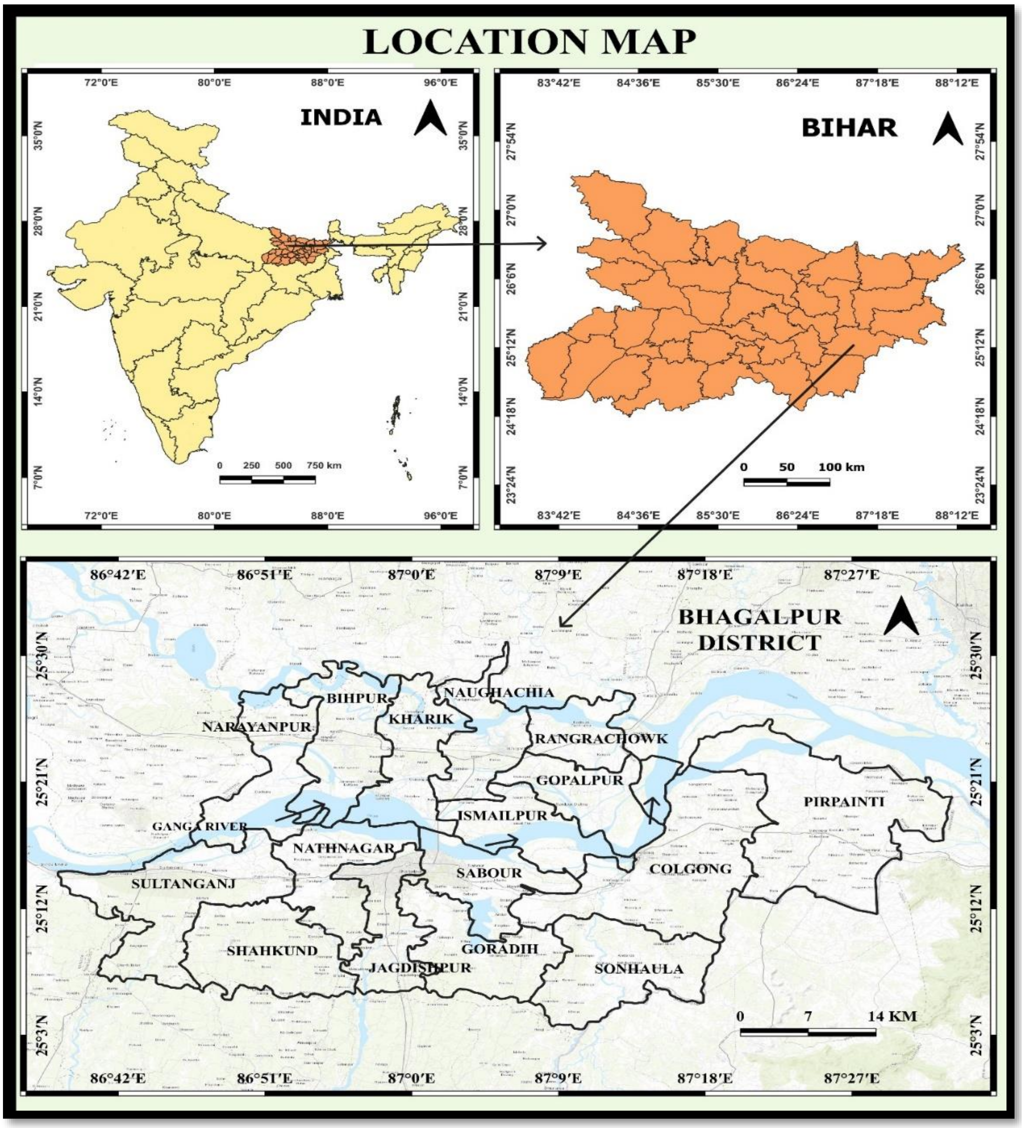


**चित्र संख्या: 1**

**4. अध्ययन का उद्देश्य**

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य —

- 2001 से 2011 तक जनसंख्या के व्यवसायिक संरचना में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- पुरुष और महिला श्रमिकों की संख्या, प्रतिशत और उनकी व्यवसायिक भागीदारी का विश्लेषण करना।
- कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत श्रमिक वर्ग के वितरण एवं उनकी क्षेत्रीय भिन्नताओं का मूल्यांकन करना।

## 5. आकड़े स्रोत और कार्यपद्धति

वर्तमान अध्ययन द्वितीयक डेटा पर आधारित है। डेटा मुख्यतः जिलावार और ब्लॉक-वार जनसंख्या तथा व्यवसायिक श्रेणियों (कृषि, उद्योग, व्यापार, सेवाएँ आदि) से संबंधित सरकारी रिपोर्टों और प्रकाशनों से एकत्रित किया गया।आंकड़ों को **Microsoft Excel** में संसाधित कर प्रतिशत के रूप में परिवर्तित किया गया, ताकि विभिन्न तहसीलों और वर्षों (2001 और 2011) में तुलनात्मक अध्ययन संभव हो। इसके अतिरिक्त, **Q-GIS सॉफ़्टवेयर** का उपयोग कर मानचित्र तैयार किए गए। इस कार्यपद्धति से जिले की सामाजिक-आर्थिक और व्यवसायिक स्थिति को भौगोलिक दृष्टिकोण से स्पष्ट रूप में समझा जा सकता है।

## 6. परिणाम और विश्लेषण

### 1. भागलपुर जिला में व्यवसायिक संरचना में दशकीय परिवर्तन (2001- 2011)

भागलपुर जिले में वर्ष 2001 और 2011 के बीच कार्यशील और गैर-कार्यशील जनसंख्या में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला। वर्ष 2001 में कुल कार्यबल 24,23,172 था, जिसमें मुख्य श्रमिकों (Main Workers) की संख्या 5,80,731 थी, जो कुल कार्यबल का लगभग 24% था। इसके विपरीत वर्ष 2011 में मुख्य श्रमिकों की संख्या घटकर 5,34,129 रह गई, जो कुल कार्यबल का केवल 17.58% था। इसका दशकीय परिवर्तन लगभग **-26.75%** रहा, जो स्पष्ट रूप से यह संकेत करता है कि मुख्य श्रमिकों की संख्या में लगातार गिरावट हुई है।वहीं,सीमांत श्रमिकों (Marginal Workers) की स्थिति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। वर्ष 2001 में सीमांत श्रमिकों की संख्या 2,74,614 थी, जो कुल कार्यबल का 11.3% था, जबकि वर्ष 2011 में यह संख्या बढ़कर 4,49,399 हो गई, जो कुल कार्यबल का 14.79% बन गई। इस प्रकार, दशकीय परिवर्तन लगभग **+30.88%** रहा, जो दर्शाता है कि गौण या अस्थायी कार्यों में लगे श्रमिकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।गैर-कार्यशील जनसंख्या (Non-Workers) में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2001 में गैर-कार्यशील जनसंख्या 15,67,827 थी, जो कुल कार्यबल का 64.7% था। वर्ष 2011 में यह संख्या बढ़कर 20,54,238 हो गई, जो कुल कार्यबल का 67.62% बन गई। इसका दशकीय परिवर्तन लगभग **+4.5%** है। यह वृद्धि सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के साथ-साथ रोजगार के अवसरों की कमी और शिक्षा या अन्य कारणों से श्रमिक वर्ग में परिवर्तन का संकेत देती है।कुल मिलाकर,नीचे दिये गए तालिका संख्या 1, से यह स्पष्ट होता है कि भागलपुर जिले में मुख्य श्रमिकों की संख्या में कमी और सीमांत श्रमिकों की संख्या में वृद्धि हुई है, जबकि गैर-कार्यशील जनसंख्या में भी धीरे-धीरे वृद्धि देखी गई है। यह परिवर्तित रोजगार संरचना जिले की अर्थव्यवस्था और सामाजिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करती है।

**तालिका 1: मुख्य श्रमिक, सीमांत श्रमिक और गैर-कार्यशील जनसंख्या का दशकीय परिवर्तन (2001–2011)**

| क्र.सं. | व्यावसायिक संरचना | 2001 कार्यबल | % (2001) | 2011 कार्यबल | % (2011) | दशकीय परिवर्तन (%) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | मुख्य श्रमिक (Main Workers) | 5,80,731 | 24.0 | 5,34,129 | 17.58 | - 26.75 |
| 2. | सीमांत श्रमिक (Marginal Workers) | 2,74,614 | 11.3 | 4,49,399 | 14.79 | + 30.88 |
| 3. | गैर-कार्यशील श्रमिक (Non-Workers) | 15,67,827 | 64.7 | 20,54,238 | 67.62 | + 4.5 |
| | कुल | **24,23,172** | **100** | **30,37,766** | **100** | — |

***स्रोत: भागलपुर जिला जनगणना पुस्तिका (2001 और 2011)***

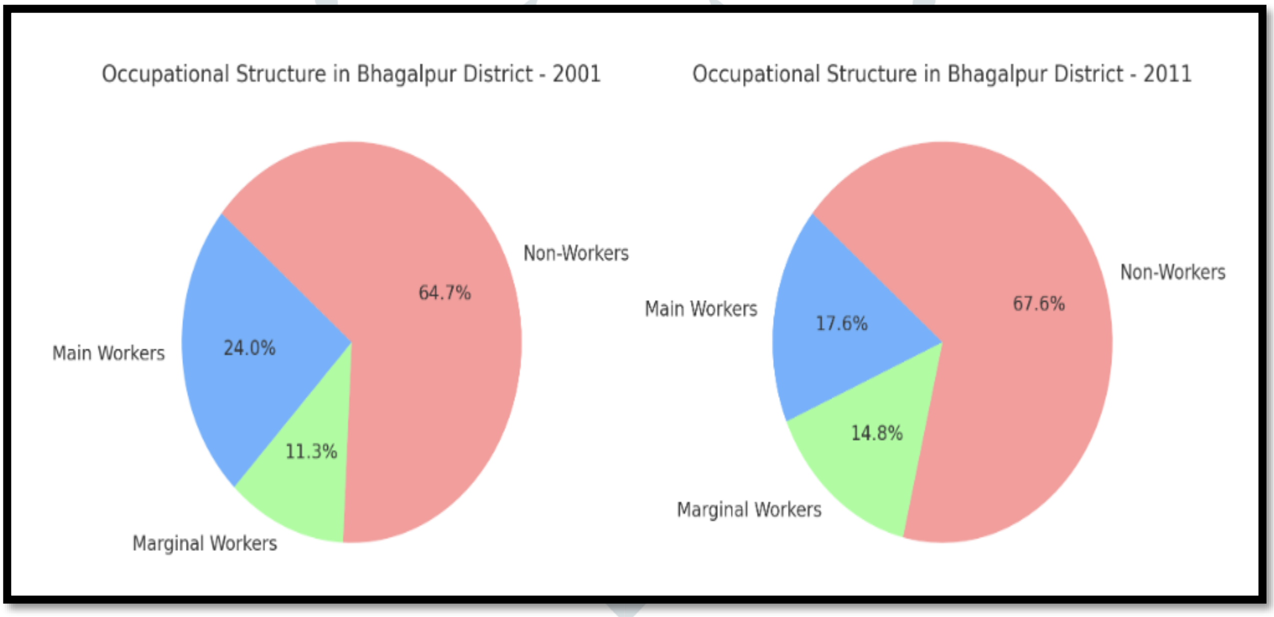


**चित्र संख्या: 2**

**2. पुरुष और महिला श्रमिकों की व्यवसायिक भागीदारी का दशकीय परिवर्तन (2001- 2011)**

भागलपुर जिले में वर्ष 2001 से 2011(तालिका 2) के बीच **मुख्य श्रमिक**, **सीमांत श्रमिक** तथा **गैर-कार्यशील श्रमिक** वर्गों में उल्लेखनीय परिवर्तन देखा गया है। प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि 2001 से 2011 के दशक के दौरान पुरुषों और महिलाओं दोनों की व्यावसायिक संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। पुरुष वर्ग में मुख्य श्रमिकों का प्रतिशत 37.8% से घटकर 27.95% हो गया है, जो कि 26.05% की कमी को दर्शाता है। यह कमी इस बात का संकेत है कि दशक के दौरान पुरुषों में स्थायी या पूर्णकालिक रोजगार के अवसरों में कमी आई है। वहीं, सीमांत श्रमिकों का प्रतिशत 9.6% से बढ़कर 17.85% हो गया है, जो 85.94% की उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुषों में अस्थायी या मौसमी कार्यों

पर निर्भरता बढ़ी है। गैर-कार्यशील पुरुषों का प्रतिशत भी 52.6% से बढ़कर 54.19% हुआ है, जो कि 3.02% की वृद्धि को इंगित करता है। यह स्थिति रोजगार के अवसरों की सीमितता और आर्थिक निर्भरता के बढ़ने की ओर संकेत करती है। महिला वर्ग की स्थिति भी कुछ हद तक समान प्रवृत्ति दर्शाती है। महिला मुख्य श्रमिकों का प्रतिशत 8.2% से घटकर 5.80% रह गया है, जो 29.27% की कमी को प्रदर्शित करता है। इसका अर्थ है कि महिलाओं की कार्य में सक्रिय भागीदारी, विशेषकर मुख्य श्रेणी में, घटी है। वहीं सीमांत श्रमिकों का प्रतिशत 13.3% से घटकर 11.32% हुआ है, जो 14.89% की कमी को दर्शाता है। यह बताता है कि ग्रामीण अथवा शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की अस्थायी रोजगार गतिविधियों में भी कमी आई है। हालांकि, गैर-कार्यशील महिलाओं का प्रतिशत 78.6% से बढ़कर 82.88% हो गया है, जो 5.45% की वृद्धि दर्शाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महिलाओं में कार्यबल की भागीदारी में गिरावट आई है, और वे अधिकतर घरेलू कार्यों या निर्भर वर्ग में शामिल हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो, दशक 2001-2011 के दौरान कार्यशील जनसंख्या में गिरावट तथा गैर-कार्यशील वर्ग में वृद्धि का रुझान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह प्रवृत्ति क्षेत्रीय स्तर पर रोजगार के अवसरों की कमी, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, और औद्योगिक या सेवा क्षेत्र में सीमित भागीदारी की ओर संकेत करती है।

**तालिका 2: पुरुष और महिला श्रमिकों की व्यवसायिक जनसंख्या का दशकीय परिवर्तन (2001–2011)**

***स्रोत: भागलपुर जिला जनगणना पुस्तिका (2001 और 2011)***

| क्र.सं. | वर्ग/ लिंग | मुख्य श्रमिक (%) | | | सीमांत श्रमिक (%) | | | गैर-कार्यशील श्रमिक (%) | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 2001 (%) | 2011 (%) | दशकीय परिवर्तन (%) | 2001 (%) | 2011 (%) | दशकीय परिवर्तन (%) | 2001 (%) | 2011 (%) | दशकीय परिवर्तन (%) |
| 1. | पुरुष | 37.8 | 27.95 | -26.05 | 9.6 | 17.85 | +85.94 | 52.6 | 54.19 | +3.02 |
| 2. | महिला | 8.2 | 5.80 | -29.27 | 13.3 | 11.32 | -14.89 | 78.6 | 82.88 | +5.45 |

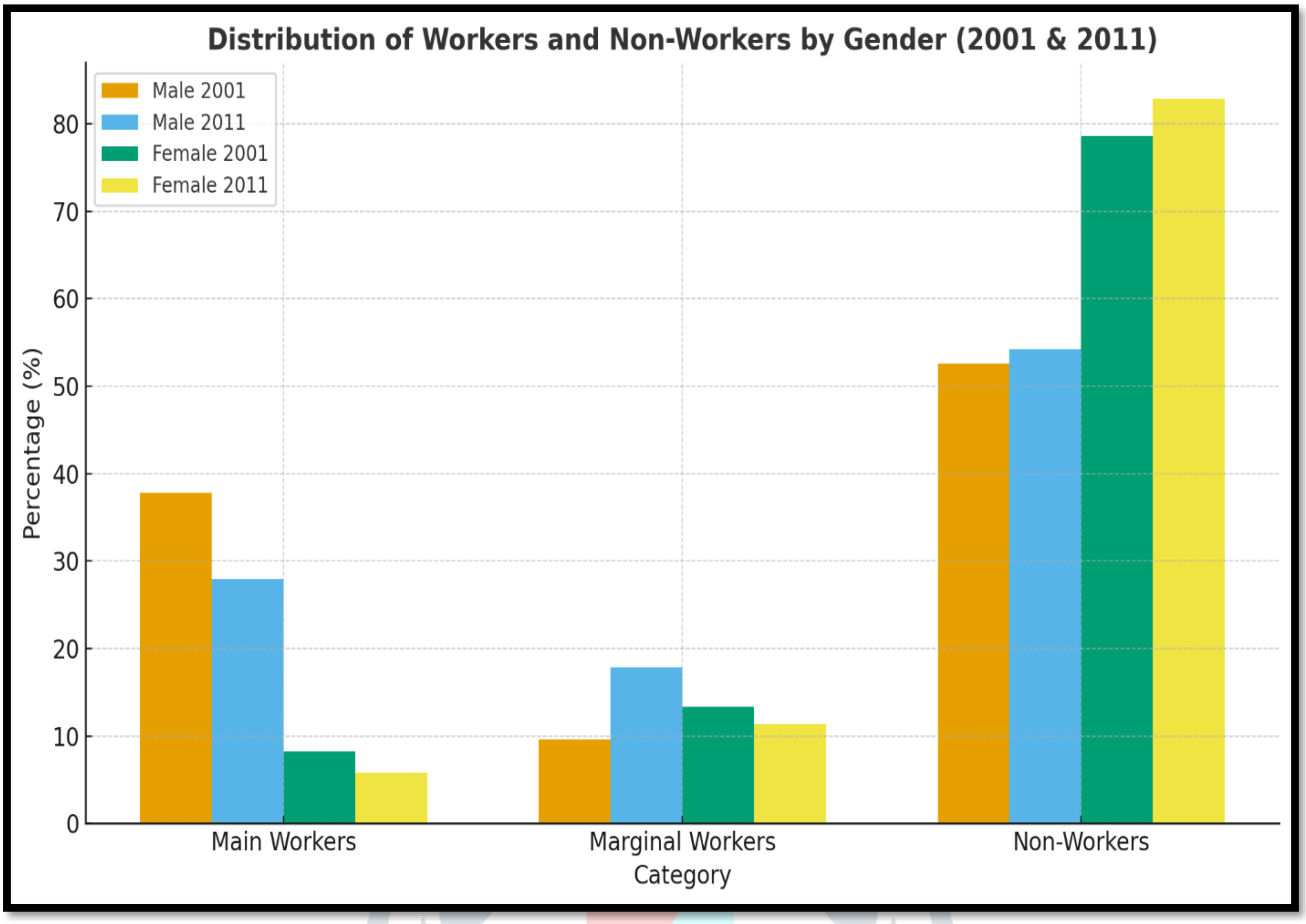


**चित्र संख्या: 3**

**3. कार्यरत श्रमिक वर्ग का प्रखंडवार वितरण (2001–2011)**

यह तालिका 4, भागलपुर ज़िले के विभिन्न प्रखंडों में 2001 और 2011 के बीच व्यावसायिक संरचना (Occupational Structure) में हुए परिवर्तन को दर्शाती है। इसमें श्रमिक वर्ग को चार मुख्य श्रेणियों—कृषक (Cultivators), कृषि श्रमिक (Agricultural Labourers), घरेलू उद्योग श्रमिक (Household Industry Workers) तथा अन्य श्रमिक (Other Workers) में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत आँकड़े ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि से गैर-कृषि क्षेत्रों की ओर होते परिवर्तन की स्पष्ट प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। संपूर्ण जिले के स्तर पर, कृषकों का प्रतिशत 19.9% से घटकर 13.74% हो गया है, जो यह संकेत देता है कि भूमि पर निर्भरता और स्वामित्व वाली खेती में गिरावट आई है। इसके विपरीत, कृषि श्रमिकों का प्रतिशत लगभग स्थिर (48.20% से 48.32%) बना रहा, जिससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण आबादी का एक बड़ा हिस्सा अब भी मजदूरी आधारित कृषि कार्यों में संलग्न है। घरेलू उद्योग श्रमिकों की हिस्सेदारी 7.4% से घटकर 6.15% हो गई, जो पारंपरिक कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प कार्यों में कमी को इंगित करता है। वहीं, अन्य श्रमिकों का अनुपात 24.5% से बढ़कर 31.79% हो गया है, जो सेवा, निर्माण, परिवहन, शिक्षा, प्रशासन और अन्य गैर-कृषि क्षेत्रों में रोजगार अवसरों की वृद्धि का प्रमाण है। प्रखंडवार विश्लेषण से स्पष्ट है कि सभी प्रखंडों में कृषकों की हिस्सेदारी में गिरावट देखी गई है, जबकि अन्य श्रमिकों का प्रतिशत बढ़ा है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में विविधीकृत आजीविका के अवसरों की ओर संकेत करता है। जैसे—साबौर, नाथनगर, सुल्तानगंज और नउगछिया जैसे प्रखंडों में अन्य श्रमिकों का अनुपात उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है, जो शहरीकरण और सेवाक्षेत्र के प्रसार से प्रभावित हैं। वहीं, इस्माइलपुर और सोनहौला जैसे प्रखंडों में कृषि श्रमिकों का प्रतिशत उच्च बना हुआ है, जो कृषि पर अधिक निर्भरता को दर्शाता है। समग्र रूप से, 2001 से 2011 के बीच भागलपुर जिले में कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था से सेवा-प्रधान ग्रामीण

अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण देखा गया है। कृषकों और घरेलू उद्योगों की हिस्सेदारी में गिरावट, तथा अन्य श्रमिकों की वृद्धि यह दर्शाती है कि ग्रामीण श्रमबल अब गैर-कृषि गतिविधियों की ओर अग्रसर हो रहा है, जो जिले में रोजगार संरचना में संरचनात्मक परिवर्तन (Structural Change) का परिचायक है।

**तालिका 3: कार्यरत श्रमिक वर्ग का प्रखंडवार वितरण (2001–2011)**

| क्र.सं. | प्रखंड | श्रमिक वर्ग (%) | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | कृषक | | कृषि श्रमिक | | घरेलू उद्योग श्रमिक | | अन्य श्रमिक | |
| | | 2001 | 2011 | 2001 | 2011 | 2001 | 2011 | 2001 | 2011 |
| 1. | नारायणपुर | 28.7 | 22.5 | 49.5 | 54.10 | 4.5 | 3.10 | 17.3 | 20.75 |
| 2. | बिहपुर | 24.1 | 18.66 | 53.3 | 49.99 | 4.7 | 3.06 | 17.9 | 28.30 |
| 3. | खारिक | 22.4 | 11.99 | 54.9 | 68.08 | 9.4 | 5.65 | 13.3 | 14.28 |
| 4. | नउगछिया | 19.7 | 17.36 | 54.2 | 45.61 | 4.0 | 4.60 | 22.1 | 32.43 |
| 5. | रंगरा चौक | 28.8 | 26.38 | 52.5 | 56.97 | 4.7 | 2.26 | 14.1 | 14.39 |
| 6. | गोपालपुर | 25.3 | 18.62 | 58.5 | 60.63 | 2.4 | 3.61 | 13.8 | 17.13 |
| 7. | पीरपैंती | 27.3 | 17.54 | 58.2 | 61.61 | 3.3 | 4.31 | 11.2 | 16.55 |
| 8. | कॉलगाँव | 19.9 | 15.68 | 55.0 | 55.14 | 3.8 | 2.10 | 21.3 | 27.09 |
| 9. | इस्माइलपुर | 28.6 | 29.79 | 62.2 | 59.26 | 2.3 | 2.54 | 7.0 | 8.41 |
| 10. | साबौर | 23.8 | 14.62 | 35.1 | 34.62 | 7.1 | 2.65 | 34.0 | 48.11 |
| 11. | नाथनगर | 20.4 | 15.65 | 50.7 | 43.28 | 7.3 | 5.84 | 21.6 | 35.23 |
| 12. | सुल्तानगंज | 19.0 | 10.22 | 49.7 | 48.88 | 4.7 | 6.85 | 26.6 | 34.05 |
| 13. | शाहकुंड | 20.8 | 12.11 | 60.3 | 60.07 | 5.9 | 6.86 | 13.1 | 20.96 |
| 14. | गोरडीह | 23.7 | 16.02 | 54.5 | 64.99 | 9.6 | 3.14 | 12.2 | 15.58 |
| 15. | जगदीशपुर | 4.9 | 3.99 | 14.4 | 12.37 | 19.5 | 14.29 | 61.2 | 69.36 |
| 16. | सोनहौला | 21.6 | 13.20 | 65.3 | 66.39 | 3.7 | 5.64 | 9.4 | 14.77 |
| भागलपुर जिला | | **19.9** | **13.74** | **48.20** | **48.32** | **7.4** | **6.15** | **24.5** | **31.79** |

*स्रोत: भागलपुर जिला जनगणना पुस्तिका (2001 और 2011)*

**7. सुझाव**

**1. कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण की आवश्यकता**

भागलपुर जिले में कृषि क्षेत्र पर अभी भी बड़ी जनसंख्या निर्भर है। अतः आधुनिक कृषि तकनीकों, सिंचाई सुविधाओं और उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे उत्पादकता बढ़ सके और कृषक वर्ग की आय में सुधार हो।

**2. ग्रामीण रोजगार के विविधीकरण पर बल**

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों का विस्तार करने हेतु गैर-कृषि आधारित लघु, कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे सीमांत श्रमिकों पर निर्भरता घटेगी और स्थायी रोजगार बढ़ेगा।

**3. महिला श्रमिकों की सहभागिता बढ़ाना**

महिला श्रमिकों की मुख्य एवं सीमांत कार्यों में भागीदारी घट रही है। उन्हें स्वरोजगार, सूक्ष्म वित्त और कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त किया जाना चाहिए। महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन देने के लिए विशेष वित्तीय सहायता और बाज़ार सुविधा उपलब्ध कराई जाए।

**4. औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र का संतुलित विकास**

जिले में औद्योगिक क्लस्टर और सेवा क्षेत्र के विकास को प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि कृषि से पलायन करने वाले श्रमिकों को वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध हो सके। भागलपुर के शहरी केंद्रों (जैसे–साबौर, नाथनगर, सुल्तानगंज) में औद्योगिक गलियारों का विकास किया जाए ताकि ग्रामीण श्रमिकों को स्थानीय स्तर पर रोज़गार मिले।

**5. शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार**

युवाओं को बदलती रोजगार आवश्यकताओं के अनुरूप तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाए एवं स्टार्टअप और स्वरोजगार योजनाएँ लागू की जाएँ, जिससे उन्हें उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में उपयुक्त अवसर मिल सकें।

**6. स्थानीय स्तर पर योजना निर्माण और क्रियान्वयन**

प्रत्येक प्रखंड में रोजगार सृजन एवं आर्थिक गतिविधियों के लिए भौगोलिक विशेषताओं को ध्यान में रखकर योजनाएँ बनाई जाएँ। इससे क्षेत्रीय असमानताएँ घटेंगी।

**8. निष्कर्ष**

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 2001 से 2011 के दशक में भागलपुर जिले की व्यवसायिक संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। कृषि क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत घटा है, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र में रोजगार की हिस्सेदारी बढ़ी है। यह परिवर्तन क्षेत्रीय शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और शिक्षा के प्रसार का परिणाम है। मुख्य श्रमिकों की संख्या में कमी और सीमांत श्रमिकों की वृद्धि इस बात का संकेत है कि स्थायी रोजगार के अवसर घटे हैं और अस्थायी या मौसमी कार्यों पर निर्भरता बढ़ी है। महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी में गिरावट यह दर्शाती है कि उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में अभी भी प्रयास अपेक्षित हैं। कुल मिलाकर, भागलपुर जिले की रोजगार संरचना कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था से सेवा-प्रधान अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रही है। यह परिवर्तन विकास की दिशा में सकारात्मक संकेत है, किंतु इसे स्थायी

और संतुलित बनाने के लिए कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र के बीच सामंजस्यपूर्ण विकास की आवश्यकता है। यदि स्थानीय संसाधनों, मानव पूंजी और नीतिगत हस्तक्षेप का समुचित उपयोग किया जाए, तो भागलपुर जिला बिहार के आर्थिक विकास में एक अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

**संदर्भ सूची**


1. Census of India, 2001. *District Census Handbook: Bhagalpur*. Series 11, Part XII-A & B. Directorate of Census Operations, Bihar: Government of India.
2. Census of India, 2011. *District Census Handbook: Bhagalpur*. Series 11, Part XII-A & B. Directorate of Census Operations, Bihar: Government of India.
3. टोप्पो, आशालता. (2012). *मुँगेली जिला के ग्राम हरनचुना का जनांकिकीय विशेषताओं के संदर्भ में विशेष अध्ययन.*
4. कुमार, वी. शिवनारायण गुप्त. (2018). *जनांकिकी.* एस. पी. डी. पब्लिशिंग हाउस, आगरा। खाण्डेकर, उषा. (2018). *छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों की जनसंख्या के व्यवसायिक संरचना.*
5. बिष्ट, कमलसिंह, एवं राणा, प्रेमसिंह. (2018). जनसंख्या वितरण एवं व्यावसायिक संरचना का प्रतिरूप – उत्तराखण्ड राज्य के जनपद उत्तरकाशी के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन। *Innovative Research Thoughts*, **4**(4), जनवरी–मार्च 2018. ISSN: 2454–308X
6. चौधरी, वीरेन्द्र. (2018). उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप। *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, **6**(2), अप्रैल 2018. ISSN: 2320–2882।
7. मालाकार, ह., एवं खन्ना, एस. के. (2019). जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना, बरमकेला ब्लाक जिला – रायगढ़ (छ.ग.). *Shrnkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika*, **6**(7, भाग–1), मार्च, 2019. ISSN: 2321–290X
8. पाण्डेय, राघवेन्द्र. (2018). बारा तहसील (जनपद–इलाहाबाद) में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन। *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)*, **5**(4), अप्रैल 2018. ISSN: 2349–5162।
9. Verma, K., & Rai, V. K. (2020). *Changes in occupational structure of population in Ballia district: A geographical study*. *National Geographical Journal of India (NGJI)*, **66**(2), June 2020. ISSN: 0027–9374. Banaras Hindu University, Varanasi.
10. Sethy, P. (2020). *Changing occupational structure of workers in KBK districts of Odisha*. *Journal of Development Economics and Management Research Studies (JDMS)*, **6**(6), 17–28, October–December 2020. Center for Development Economic Studies (CDES). ISSN: 2582–5119.
11. Rina, & Godara, R. (2020). *An analysis of occupational structure: A case study of Panchkula district*. *Shodh Sanchar Bulletin*, **10**(39), 123–130, July–September 2020. ISSN: 2229–362